बालशौरि रेड्डी के उपन्यास और युगीन चेतना

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

युग–चुतना के साथ कदम–से–कदम मिलाकर चलनेवाला साहित्य के माध्यम से एक अमिट छाप छोड़ जाता है। उच्चकोटि के रचनाकार के समक्ष अभिव्यक्ति की समस्या नहीं होती । संपूर्ण कलाओं में साहित्य–कला ऐसी कला है, जो निरंतर गतिशील रहती है। इसी गतिशील साहित्य की महत्वपूर्ण विद्या गद्य है, जो संघर्षरत मानव–चरित्र के रूपायन का आधार है। उपन्यास इसी गद्य विद्या की इकाई है, जिसमें मानव–जीवन के सभी पक्षों एवं विषमताओं का वर्णन होता है। कविता रीति, रस, अलंकारादि की वन रूपी वीथी में उलझी होती है, नो नाटक अंतरंगता के अभावनों में तथा कहानी अपने सीमित परिप्रेक्ष्य में, ऐसे में उपन्यास ही एकमात्र ऐसी सशक्त गद्य–विद्या है, जो मूलभूत जीवन मूल्यों की प्राप्ति में नित संघर्षरत रहता है। आज का हिन्दी उपन्यास मात्र कथा को नहीं कहता, बल्कि तिलस्मी–ऐयारी को पार कर यथार्थ धरातल पर स्थित है। विज्ञान के बढ़ते चारों में मानव मन में अतृप्ति भर दी है। हताशा, कुंठा, निराशा, अतिमहत्वाकांक्षी, जिजीविषा – जैसे भावों ने उसका मार्ग ही अवरूद्ध नहीं किया, बल्कि सोचने – समझने की शक्ति भी छीन ली है। नित संघर्षरत रहकर मानव के हृदय का रस अर्थात् प्रेम ही सूखता जा रहा है। आज यदि हम अपने चारों तरफ नजर धुमाएँ तो हम पाएँगे कि व्यक्ति ने अपने आस–पास ऐसा अभेद्य कवच बना लिया है जिसे छोड़ना बड़ना बड़ा ही मुश्किल कार्य है।

श्री रेड्डी के उपन्यास उसी कचव को भेदने का प्रयास करते दृष्टिगोचर होते हैं। साठोत्तर हिन्दी–उपन्यासों में विभिन्न विषयों को आधार बनाकर लिखे गए उपन्यासों में श्री रेड्डी जी के उपन्यास अपना अलग ही महत्व रखते हैं। पौराणिक उपन्यास शबर से अपनी औपन्यासिक यात्रा प्रारंभ करने वाले श्री रेड्डी जी करीब दो दशकों तक बराबर उपन्यास–साधना में लीन रहे। मात्र उपन्यास ही नहीं, कहानी, एकांकी, समीक्षा और अनुवाद पर भी उनकी लेखनी चली। उनकी प्रतिनिधि कहानियों का एक संग्रह 'डॉ. बालशौरि रेड्डी की प्रतिनिधि कहानियाँ' नाम से श्री अशोक कुमार ज्योति के संपादन में नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ। कई पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया, किन्तु उनका वास्तविक पुरस्कार पाठकों का स्नेह है। रेड्डी जी के प्रथम उपन्यास शबरी में ही शबरी आधुनिक नारी की प्रतीक है। इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करती नारी के चिंतन में बदलाव आया है। लेखक ने अपनी कल्पना द्वारा एक नई भावभूमि तैयार की है। आज की नारी में त्याग, स्नेह एवं एकनिष्ठता की कमी हो रही है, शबरी के पात्र द्वारा लेखक नारी में इन्हीं नारित्व गुणों की स्थापना करना चाहते हैं। यही नहीं, वह जातिवादी भावना पर भी प्रहार करते हैं। सामाजिक उपन्यास जिंदगी की राह में लेखक ने मध्यवर्गीय विषमताओं एवं समस्याओं को उभारा है। खंडित होते जीवन–मूल्यों को बचाती सरला संघर्ष को ही जीवन मानती है तथा मरण में भी इसी जीवन को तलाशती है। मानव परिस्थितियाँ नहीं बनाता, परिस्थितियाँ मानव का संचालित

करती है। इन्हीं परिस्थितियों की कथा–व्यथा है जिंदगी की राह। यह बस्ती ये लोग–जैसे सामाजिक उपन्यास में भली ही मद्रास–जैसे महानगर को कथा का आधार बनाया गया हो, किन्तु कमोबेश हर शहर, हर बस्ती की यही स्थिति है, कंक्रीटों के जंगल में रहते–रहते हमारा मन भी पाषाण होता जा रहा है। कहने को मनुष्य अति आधुनिक होता जा रहा है, किन्तु उसका मन क्षुद्र से क्षुद्रतर होता जा रहा है।

छोटे–छोटे स्वार्थों की खातिर हर रोज शहरों में नैतिकता की हत्या होती है। शहरी विद्रूपता की कथा कहता यह उपन्यास एक नवीन चेतना मानव में जाग्रत करता है। आधुनिक समाज मे विवाह–जैसी पवित्र भावना का लोप हो रहा है। नई पीढ़ी पुरानी परंपराओं को नहीं मानती। आज विवाह त्याग, कर्तव्य और प्रेम का नाम नहीं, बल्कि जीवन का समझौता है तथा जीवन का दूसरा नाम है दुःख। इस उपन्यास के नारी–पात्र अपनी विशिष्टताओं के कारण आधुनिक नारी के प्रतीक बनकर उभरते हैं। भारतीय समाज में नारी–इच्छा नहीं, पुरुष–इच्छा को सर्वोपरि माना जाता रहा है। फलस्वरूप बेमेल विवाह, बहुविवाह, शोषण, दहेज–जैसी अनेक कुरीतियाँ समाज में व्याप्त रहीं। बैरिस्टर उपन्यास इन्हीं संस्कारों एवं इच्छाओं को दर्शाता है। यह उपन्यास एक मौलिक एवं चरित्रप्रधान उपन्यास है, जिसमें भारत का मध्यवर्गीय समाज अपनी संपूर्ण विद्रूपता से उभरा है। जैसा कि कहा गया श्री रेड्डी जी के सभी उपन्यास युग–चेतना के प्रतीक है। प्रकाश और परछाईं एक ऐसा ही ऐतिहासिक उपन्यास है। भारतीय इतिहास में चाणक्य की समता कर सकनेवाले तिम्मरुसु रहे। यह उपन्यास भले ही एक बालक के अदम्य उत्साह, वीरता एवं परिश्रम की गाथा कहता हो, किन्तु ऐसे बालक हर युग में होते हैं, चाहे वह सुकरात, लिंकन या फिर महात्मा गांधी हों। उनका अंत पाठक के मन में अनेकों प्रश्न छोड़ता है। प्रकाश को छाया में परिवर्तित होते देर नहीं लगती। युगो–युगों की मानव–गाथा एवं व्यथा इस उपन्यास का प्राण–तत्व है। स्वप्न और सत्य दो विरोधी भावों की गाथा है। कहीं स्वप्न भी सत्य हुआ करते हैं ? यह उपन्यास व्यक्तिगत एवं सामाजिक जिजीविषा से ऊपर उठकर एक उदात्त भावबोध की कथा कहता है। महत्वाकांक्षा नारी में भटकाव पैदा करती है। किन्तु समय रहते यदि वह सत्य को पा लेती है तो वह आदर्शमयी हो जाती है। जीवन बहता जल है, अतः उसे रोकना नहीं, बल्कि उसके साथ बहने में ही समझदारी है। यदि मनुष्य अपने जीवन–मूल्य एवं आदर्श निश्चित कर ले तो उसकी लघुता में ही महानता का वास होगा। साहित्यकार के साहित्य–सर्जन के पीछे विश्व–बंधुत्व की भावना भी रहती है। धरती मेरी माँ उपन्यास विराट सांस्कृतिक भावना एवं समन्वय कर संदेश देता है। मानव को कर्तव्य एवं प्रेम कभी नहीं भूलना चाहिए। मानव–मन की संकीर्णता सभी फसादों की जड़ होती है। अतः जाति, धर्म, भूमि और पद–जैसी संकीर्णताओं को त्यागकर विश्वात्मा बना जा सकता है। यह एक ऐसा प्रासंगिक उपन्यास है, जो मानव में विश्व–प्रेम की चेतना का संचार करता है। धरती नारी–स्वरूपा है, जिसमें हर मानव मातृत्व के दर्शन कर सकता है। इस कृति में कला और विज्ञान के संयोग की गाथा है। अति प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास लकुमा ऐतिहासिक वैभव की कहानी कहता है। लकुमा एक ऐसी नारी की प्रतीक है, जिसमें शालीनता, स्वाभिमान एवं निःस्वार्थ भावना कूट–कूटकर भरी है। इस नारी प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास में श्री रेड्डी जी का नारी–विषयक नवीन चिंतन दृष्टिगोचर होता है। प्रेम एवं बलिदान से परिपूर्ण यह उपन्यास देश, काल एवं परिवेश को समायोजित किए, एक अद्‌भुत रचना है। इस उपन्यास के नारी–पात्र कला, प्रेम, त्याग और कर्तव्यपालन का सर्वोत्कृट उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्रबुद्ध जीवियों पर व्यंग्य करता सामाजिक उपन्यास प्रोफेसर उच्च मध्यवर्गीय

समाज का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में नारी एवं पुरुष दोनों भिन्न जीवन–मूल्यों का वर्णन है तथा शोषण भी। व्यक्ति–मनोविज्ञान को अभिव्यक्त करता यह उपन्यास शिक्षा के क्ष्ज्ञेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण को भी अपने में समाहित किये है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरू एवं शिष्ट की गौरवशाली परंपरा रही है। आज शिष्यों के साथ शिक्षकों का नैतिक हनन होता जा रहा है। परस्पर ईर्ष्या, अहंकार, मिथ्या, आडंबर, सतही सोच के शिकार शिक्षा–अधिकारी एवं शिष्य समाज तथा देश का क्या हित कर सकेंगे, यही उपन्यास का संदेश है। ऐतिहासिक उन्यास वीर केसरी में इतिहास एवं कल्पना का मणिकांचन संयोग हैं जिस प्रकार रीढ़ की हड्डी मनुष्य के शरीर को उचित आकार प्रदान करता है, इसी प्रकार व्यक्ति का आत्मसम्मान उसे उचित व्यक्तित्व प्रदान करता है। यह उपन्यास इसी आत्म सम्मान, कर्तव्य और पितृभक्ति की कहानी कहता है। शौर्यपूर्ण संघर्ष एवं युद्ध का रोमांचकारी चित्रण इस उपन्यास को कलात्मकता प्रदान करते हैं। इस उपन्यास के पात्रों की तरह आज हमारे समाज में तेजस्वी एवं संघर्षशील व्यक्तियों की कमी है। इस कमी को पूरा करने का संदेश देता है यह उपन्यास अंत तक अपनी गरिमा बनाए रखता है। लेखक का उपन्यास दावानल एक ऐसी प्रतीकात्मक ऐतिहासिक रचना है, जो अपने में महाभारत–सी कथा समेटे है। आंध्र–प्रदेश के पलनाडु महायुद्ध से सम्बद्ध कथा को लेकर लेखक ने महाभारत–जैसे पारिवारिक दावानल को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। युद्ध कैसा भी हो, सदैव विनाशाकारी ही होता है। युद्ध सदैव मृत्यु देता है, जीवन नहीं। दो–दो महायुद्धों की विभीषिका कोई नहीं भूला, यदि तृतीय विश्व–युद्ध हुआ तो मानव–जाति ही पृथ्वी से लुप्त हो जाएगी, यह सभी जानते हैं। फिर भी दावानल हर जगह सुलग रहा है। इस दावानल के पीछे मात्र मानव का अहं एवं उसकी स्वार्थ–वृत्ति ही होते हैं। जीवन की भूलों से सीखनेवाला, भविष्य के प्रति सजग हो जाता है और जब ऐसा नहीं होता तो दावानल ही सुलगता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री रेड्डी जी ने हिन्दीतर भाषी होते हुये भी हिन्दी के लिये जो कार्य किया, उसे हिन्दी–जगत कभी नहीं भुला पाएगा। उनकी औपन्यासिक कृतियाँ मनोरंजन का साधन नहीं, व्यक्ति, समाज एवं देश के लिये साध्य हैं, जो उन्हें साहित्यिक यात्रा में मील का पत्थर साबित करत हैं। चलते–चलते मुझेये पंक्तियाँ स्मरण हो आती हैं कि –

लेखक ! मुझे वो लेखनी दें
जिससे हस्ताक्षर किया करता है
लेखक! मुझे वो उँगलिया दें।

संदर्भ

- बालशैरि रेड्डी का व्यक्तिव एवं कृतित्व – डॉ. ओ.पी. चौधरी।
- बालशैरि रेड्डी के उपन्यासों में लोक जीवन– डॉ. सुनीता द्विवेदी।
- बालशैरि रेड्डी के उपन्यास और सामाजिक चेतना – डॉ. आर.पी. गौतम।
- हिन्दी साहित्य के उपन्यासों में सम्सामायिक एक अध्ययन–डॉ. शत्रुघन सिंह।
- हिन्दी साहित्य का उपन्यास और सामाजिक संवेदना – राम विलास सिंह।

Copyright © 2017, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.